प्रेम

प्रेम, वह नहीं,
जिसे तुम समझ रहे हो अभी,
बिलकुल खालिस-बिलकुल असल,
कि यह जो तुम्हारी धमनियों में है रक्त का उफान
और खुमारी सा छाया हर वक़्त
यह तुम्हारे उम्र के तकाज़े भर हैं।

दरअसल,
बेइन्तिहाँ फ़ुर्सत और तन्हाई में जब रहोगे तुम किलेबंद,
प्रेम तुम्हारा कटहल सा मह-मह फैलेगा...
लम्हात जब धर चुके होंगे गुज़रे सालों की शक्ल,
तब याद कर-कर
तुम प्रेम में धीमे-धीमे, पूरा-पूरा पकोगे.

डॉ. अनुज कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर
हिंदी विभाग
नागालैंड विश्वविद्यालय

वह शर्मसार है

जंगली फूल बिखेर रहे हैं धूप,
पहाड़ सुखा रहें हैं, ओस से भींगे पीठ.
पत्तियों, फूलों पर नाचती हवा,
घाटियों में पहुँचा रही,
सुगंधी का संदेस.
हवा की फौज को चीर रहे,
साँय-साँय...
देवदार-चीड़ के पेड़.
बाग़-बगीचे...
रंगों की साजिश में मशगुल.
झाड़-झंकड़ जल्दी-जल्दी में,
बिछा देना चाहते हैं गलीचा.
तालाब ने घोल लिया है आसमान.
पृथ्वी ने भूला दी है नींद .
करीने से सजा है कुदरत का गुलदस्ता.
अजब नीरव कलरव है,
और मनुष्य मौन.

देखो, बच्चों के लिए,
चित्रों में भर-भर रहा बसंत.
बसंत ने कर दिया है,
उसकी नस्ल का अपराध - सरेआम.
वह बहुत शर्मसार है.